

अथ धनस्य गुणः श्रीकृष्णधनस्यार्थेन वृत्तकालिखितं ॥ अथवा नो यति ॥

अनवानासासम्बल

आशा भद्रकाथि

2937

ASHA ARCHIVES



3

विदुः॥ ॥ नदीर्यसोदर्यं कुडिनगत्रिकन्यकुलविशुकवाद्याः कल्यन्क कथमपि विनिश्चियरुनयः  
दिमनललनाया किमनसा गद्यारिद्धः यायामाषिगिनिडासायुक्षयदवी० ॥ १२ ॥ सुनिवाशा ॥ ॥ नर्ववषीया  
नमोऽर्चनवायागुलाक्रयविगम नूधावकिगगगः गलदधीर्वधावचकलगविमरुसिवया रुभः  
वेगतिवदकुलायुवनयः ॥ १३ ॥ ऊम क्कारिनी ॥ ॥ किमोष्यवासीद्विगमधिकर्षवागददक कुनाग  
नवनधिकर्यवासयनिल ॥ द्विविद्धः वदिगमनसिववकुः वयिनिनिय मयूखारुषामयूयनिनवयादावृजयुर्ग ॥ १४ ॥ वरु







॥ नमः ॥ निषकुर्विषकुर्मय्ययविकमलानां नवकलां । महायद्रागव्यामृदिनमलमायनमनसा महानकयव्याकादधनियन  
 लहरीम ॥ २१ ॥ यत्रायासाद ॥ ॥ रुवानिर्लदाशमयिविनवदृष्टिं सकवृत्ता मितिकाकुवाञ्छुन  
 रुवानित्वमितिय ॥ नदेवर्लनमेदि ॥ गमितिउसायुत्रयदवीन्मूकन्यवृक्षन्यसूठमूकटनीनाडिन  
 ॥ ॥ गदम्बा ॥ ॥ त्रयादत्रावामं ॥ वयवयविरुक्तेनमनसा गरीर्द्धग्रीवावयवमयिर्गकदगम  
 ॥ ॥ मज्जनारुं निनयनं कृवात्यामानमृकटिलगगिवृथालमूकटं ॥ २३ ॥ यत्रा ॥ ॥ उगल्लुगंधागारुनि

[illegible]



रथाङ्गल्यं ४ गिल्यं सकलमपि मया विनवर्नं गति ४ यादादि ५ कमने मदानाद्यादि विधि ४ । यणम ४ सर्वं ४ मुखमखिलमात्माः  
गणगययोययोय सुवरुवदुयत्तमविल सिनी ॥ २१ ॥ समयाकुरुवनी ॥ ॥ सुधामया स्वाययनिकः  
मन्युनली मिययन विविधिविगनः मखाईदिविषय ४ कलालीयत्तु ४ कवलिनवग ४ कालकालः  
नवउ ननिगार्क मरुमा ॥ २४ ॥ ॥ दंदानंदीनं ॥ ॥ किनीटं वनि ४ यनिह ४ यन ४ कंठरुद  
॥ ॥ सुधनसुयसरुमरुयानसुवर्नं रुनसुयका नवयनिउ नाकि विडयन ॥ २२ ॥

॥ २॥

॥ ३॥ यनिमिलिनया ॥ यनिविदा । यमा नईरुक्ता नविगनिगुनीनामविषय निनालाक लाकनिवसगिहिरासा  
॥ ३५ ॥ सुक्तायनायासाय ॥ ॥ विगुडानगुदुक्कटिक विगदंयामडनकं गिवंमवदवीमविगि  
वसिनी । यया ४ कात्यायान्नागगिक वलसात्रयगवर्गिविधुनाक धाकाविलसगिचकारीवडगनी  
॥ ॥ ॥ समन्मीलनं विक्कमल सकनन्दकनसिकं रुडरुं सवर्दं किमपिमरुगामानसवनी  
यादयादगगुनिगविद्यायनिगनि यदादरुदायागुं रुगमखिलमद्रु ४ ययवृंष ॥ ३६ ॥ सुनगकिहं वृया ॥ ॥



॥ नवम्यामिमयनियन्त्रिस्तुतया सुब्रह्माणावत्तरुनेत्यत्रिणक्ष्वय्य । नवम्यामिमयकमयिसगित्तुनेकशत्रुनिध  
मिति नवम्यामिरुवर्न ॥ ३९ ॥ गूढा  
नीनां वसमयो । यदात्ता कला कान्दहति  
रुम्य ॥ नवाधाप्रभृते मरु समये याता  
विद्गद्यया मना धार्या उरु उन्नतनी मरु गदिदी ॥ ४० ॥ मूलगीरुवचूया खानेष्टा कः ॥ ५० ॥ नवम्यामिमय

[illegible]







स्मिन्वर्ग। रुनाहिराहीगा सनसिन्नहसोराग्रहननी सखीषुमेवामसयिजननिदृष्टिः सकवृत्ता ॥ ५१ ॥ गनककुम्भसु २२७  
 वृन्वयस्त्राधिदधनी युनांरुंश्चिकुयगमविदावन रुला००मनरु(ग)राधनयनिकुला००सकलिक गवाककुम्भ  
 स्मन्नगवविलासकलयगा ॥ ५२ ॥ विरुक्कशेवर्षु यनिकलिननीलांजनयोगे विरुगित्वनेरुगिनयमिदमीगानः २  
 दयिग। यन०सर्षुदवान्दुहिलहविन्नानयनगाः नड०सर्वविरुक्कम००निसुपानीरयमिव ॥ ५३ ॥ वियेकीकः  
 कुन०ययुयनियनाधीनदयदयामिशेन्न०ननुपधवलगा०मत्रविरि०नद०(ग)०(ग)०गानयननयनियधुवममृगायापानी

शियमियं। स्त्र००स्त्र००कालागुन्नवरुडंवालमिलनामृ०लीलालिख्यवरुगियदहाडावलनिका ॥ ५४ ॥ गलनखादि (ग)००मकग  
 गिगीर्कनियुन विवादद्यानद्वयगुणगुणमखाय निरुव०। विवाडकनानाविधमधुनानागाकन्नरुवागयानां०मर्म  
 शीलिनियमसीमान००वन ॥ ५५ ॥ मृ०लीलमृ दीर्घनिवरुडलनानांवनमृ००वदुर्हि००सोदयंसनसिन्नरुव०  
 सोदिवदने०। नखरु००मर्म००यथममथनादधः कनियोग्यदुर्धु००गार्वा००मममरुयककाय्यनेधिया ॥ ५६ ॥  
 नखानामृ००धार्गेन्नवनलिनगाकन्नरुवा०कना०००कनिकथयकथयाम००कथममी। कदाविद्वामा००रुडनिविधिना००कनकस



श्री॥

लंयदिकीठ न्नक्षीवनलमललाङ्गावृणदलं ॥ ११ ॥ समन्ध विस्मयदियवदनपीगंरुनयुगं गवदंनः खदंरुनकुसमंयसुग  
मुखं। यदालाकागकाकलिगदयथाहासजनकः खकुलाह नमंयंविम्वतिरुक्तनमदिति ॥ १२ ॥ सुमनवका  
डावमृगनसमालिककल(शो नसन्दः ४ सन्दो नगयति यनाकमनसिनः। विवकोभोयर्मदविनिगवधुसंगः  
मनसोकुमानावश्याविद्विदवदनको उदलना ॥ १३ ॥ वदत्यम्बसुवनमवदनकुरुयुक्तिरिति ४ सामानदांसकाः  
मलिरिचमलाहावलगिका। कवाहा(माविम्वधनवृविहिनः सजलितां पनायद्यामिथीयूनमथयिदुः कीर्तिमिवन ॥ १

12

४ ॥ गवसुन्यंमन्धधनलिधनकनुडलियिदुंययः यात्रावात्रंयविवहति सावस्वगठुवा दयावस्था<sup>४</sup>कंदविउं गिगुनास्वाद्यगवय  
कवीतां योठानामडनिमहनीयाकवयिना ॥ १५ ॥ रुनकाधका लावलिरिचवलीठनवयुवागरीयननारीसवसि  
तसंधामनसिउ ४। समरुस्त्रीवस्मादवलननयधु मलनिकाजनस्काजानीगतवजननिनामावलिविनि ॥ १६ ॥ य  
गल्कालिन्दीगनृगवगवंगकृमिगिव काणमध्यकिंवि स्मृनमितवगहातिसधियां विमददन्धानां कुवकलगयावंगनः  
गमंगवृहर्ग व्यामयविशदिवनारीकुरुविणी ॥ १७ ॥ स्मिनागंगवेरुस्मनयूनकनामावलिलगाकलानावंकुं कुसुमगवधु







कृ२

श्रीकालिकावतुलनवृत्तमणित्रिविधः॥ ८२ ॥ नमोवाचं वृत्तमोनयनमनीयाययदया सुवासेदं दायसूटत्रिविधसालक कव  
 र्णः। असूययनयदलिह ननायसूटयनयगुना मीगानः॥ यमदवनकं कलिजनव ॥ ८३ ॥ मयांत्वा गानसुबलन  
 मथनवेलकनमिदंललाह रुकोवचनवकमनं नाठयमिभ। विनादकः॥ गत्यंदहनकमसूनुलिगवगानुलाका  
 टिका(८४) किलिकिलिगमीगानत्रियुगा॥ ८४ ॥ ॥ हिमानीहकयं हिमगिगिगयकाकवचुओनिगायांनिदुग  
 निगिचयवयनरागनविगदो। यत्रंलक्ष्मीयां गियमयिहउकोसमयिनीं सवाउंत्वत्वादीजननिडयमयिगमिहकिं॥ ८५ ॥

ली॥

१५

गमसखमुखाः॥ सिद्धिमनुलां नवदावायानुक्लिगिहिनलिमायातित्रामः॥ ८६ ॥ गनारुमं वत्वंदुहि एहनिबुदध्वनावागि  
 वः॥ स्वसुकायाटाटिनकयठयदुदयठध्वदी यानांरुसायतिहलनगारावृणमया गनीनीष्टकावीनसू  
 वदगांदाधिकदुकं॥ ८७ ॥ कलंकः॥ कसूनीन ऊनिकनविमंडलमयं कलाहिः॥ कयुंयेमोवकठनंके  
 निविठिनी। गनुसूडागनयतिदिनमिदंत्रिक कुरुनंविधिहंआहूयानिविठयतिनूनकवकग॥ ८८ ॥  
 खदहादुदरिह्योतिहिनलिमायातिनहिना। निषयानिह्यस्वामहमिति सदाहावयदियः। किमाध्वयं नस्यतिनयनसमृद्धिह



॥ यथा महासंवरुणिर्विचयतिनीनाजनध्वं ॥ २१ ॥ समुद्रमकुलंरुनरुनमुनश्चात्रुसिं कटाक्षकन्द्याः कनिजन  
कदम्बप्रतिवद्युः ॥ रुनस्यत्वदार्किंजननिजनयन  
॥ कलरुंवेधार्कं कनिकविज्जुज्जनकवयः ॥ २२ ॥ गिरामाद्रुद्वीदुहिगगुहिगीमागमविलो  
रुनः ॥ २३ ॥ गिरामाद्रुद्वीदुहिगगुहिगीमागमविलो

मायां । त्वं विष्णुमाकुरु नय नययमा मनाम साक्षादयादक नृणां गुणमुक्तिमव ॥ २५ ॥ यायुत्यदं यदस गज उ गत्व दीय नागी कजा निद  
दययुज गज नय । नावद्विकल्य उ टिला कुटिलयका  
विहानमके ४ कृत्वा मन ४ क न ग म लुल सव रे म ४ । यान  
॥ सुला सुमृत्ति सुमही यमुखा मुकृत्ति कस्या त्वेनायि नद  
किनमये नि नि नि नि नि ॥ २६ ॥ कालाग्नि काटि नृ वि न ध व उ ध शुद्धा वा द्रा व न य रु व गी म मृ गो य दृ ति । ग्या मा द्य न स न न गी स क



४॥४॥

[illegible]

29

॥ २ ॥ इह सांनमकात्रिवसुसकसाननरुनिवाहर्नयनाक्रमवगादयीहवत्रदविन्दुंविनायाहर्नागस्यापिधुवमवदविगत्रमा  
जागनवानुग्रहवावःसृक्सुधानसदवमूवाति  
निश्कलंनृत्तानस्रगमित्यवेगिविनर्तःकेष्विदुध  
यदावास्यदंयुवायिनीयावननिसूटं॥ ४ ॥ यत्सद्या  
मनसाखदीडामिन्दुयुक्तं। अकोर्वमिसत्रखनीमनूगगाडायांविचिह्नय (गी०) गङ्गागिनिवर्तनमुनियनंयागंविनासिद्धिदं॥



॥ ५ ॥ न के कं व द वि वी ज म य नं म यं ज न वं ज नं कूट स्य यदि वा पृथक् म ग रं य द्वा कि नं य क मा द। यं यं काम मू य द्वा ये न वि  
 धि ना क ना पि य द्वि कि नं ड य वा म रु लि क ना गि न न  
 कू म उं द द्वा र रु क था व ज न य ग ल क ल कि र्ण  
 नी य त्वा म म न ग ल या नि म न मा न र्थ क वि त्वां कू ग  
 म न म द वी त्र व गि त्री षा य नि मृ द्वि कि नां। वि रु नं वि क ट मृ ट क न य दानि या नि व क्तां वृ ज्जा रु र्वा रा न गि ता न गी ध व म वि क क्षा

मा नं गं म म रु नृ णां ॥ ६ ॥ वा म य म क र्वा धा वि लि म रु य द्वां साः  
 न कू न्धा कू ल ॥ ७ ॥ सां व ज य रु कानि न य न द्वि ग्व य रु ना ना कि  
 ॥ ८ ॥ य त्वां या ण न य ण नी क द ट ल म्भ स्था नि ना म य रु मि त्वा नी

२२

वि६

सि य द क म न क थि नं स त्वा द सं ख्य क ने म्भ क्ता र्क्ष न वि धि द्वि ग्व ष म हि त स त्म य द या म्भि त ॥ २० ॥ सा व र्ण नि व द्वा म म्भु य दिः  
 न किं वा न या चि कि नं नू नं म्भु मि दं य ठि व्य ति  
 म्भे नं रु ण रु क्ता म्भु ख नी कू न न र वि नं य म्भान्म  
 नं र्वे द या क र्ण व ग र न य नं क्षा मा दि सि द्धा रु कं  
 । मे दं क ना ति स ग रं या गी ष्व न ४ सि द्ध य ४ ॥ २३ ॥ यदि ज य नि ज ग त्मा र्थ यून म र्क ना डं रु व नि रु वि का वी न्द्रा ४ स र्व वा गि न्द्रु

ज ना य स्था मि रु कि त्व यि। स वि श्वा यि ल य्त्वा मा न्म नि द्द रं स जाः  
 मा यि कु र्व ॥ २२ ॥ म्भ न न्द्रा रु व र्क य य्त्वा न य नं नि द्वा द्वा मा य  
 । व ग्ना क र्ण यून व ग र क र्ण ना न क र्क कि म्भु कि य दं ल य्त्वा जा य  
 । यदि ज य नि ज ग त्मा र्थ यून म र्क ना डं रु व नि रु वि का वी न्द्रा ४ स र्व वा गि न्द्रु



[illegible]

३३